मॉडल सेट-10

समय 3 घंटा 15 मिनट **पूर्णांक-100**

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देश:-

(क) परीक्षार्थी यथासम्भव अपने शब्दों में ही उत्तर दें।

(ख) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

(ग) उत्तर देते समय शब्द-सीमा का ध्यान रखें।

(घ) दाहिनी ओर अंक निर्दिष्ट किये गये हैं।

(च) प्रश्न-पत्र को ध्यान से पढ़ें। इसके लिए 15 मिनट का अतिरिक्त समय दिया जा रहा है।

प्रश्न 1. (अ) निम्नलिखित अपठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दें। 6 x 2 =12

हिन्दी-साहित्य के इतिहास में 'गीत विधा' काव्य के अंतर्गत आता है। गीतों की उत्पत्ति उसी समय से हुई होगी जब लोगों ने अपनी भावनाओं को व्यक्त करना शुरू किया होगा। समाज में मांगलिक कार्यों के समय महिलाएँ गीतों की मंगल-ध्वनि से वातावरण को आनंदपूर्ण बना देती हैं। मिथिला में विद्यापति के गीत आज भी प्रचलित हैं। उन्होंने शंकर, दुर्गा, भैरव, गंगा आदि पर असंख्य गीत लिखे जिनकी प्रासंगिकता आज भी बनी हुई है। गीतों में जो साहित्यिक पुट दिखाई पड़ती है वे न केवल काव्य रस से ओत-प्रोत हैं बल्कि हमारी संवेदना को भी झंकृत कर देते हैं। ये गीत हमारे मन में भक्ति क भाव भी पैदा करते हैं। आगे चलकर गीतों की एक सुदीर्घ परम्परा चली। अनेक कवियों ने भी गीत लिखे। सूर, तुलसी, मीरा, मैथिलीशरण गुप्त, महादेवी वर्मा, जयशंकर प्रसाद आदि की रचनाओं में गीतों की भरमार मिलती है। महादेवी वर्मा को 'आधुनिक मीरा' की संज्ञा दी गई है।

(क) 'गीत' किस विधा के अंतर्गत आता है?

(ख) गीतों की उत्पत्ति किस समय हुई?

(ग) विद्यापति ने किस पर गीत लिखे थे?

(घ) गीत लिखने वाले कवियों की परम्परा में कौन-कौन से कवि हैं?

(च) 'आधुनिक मीरा' की संज्ञा किसे दी गई है?

(छ) उपर्युक्त अवतरण का कोई उपयुक्त शीर्षक दें।

ब. निम्नांकित अपठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिये प्रश्नों के उत्तर दें। **4 x 2 = 8**

अमेरिका जैसे सुसम्पन्न देश में पुरुष महिलाओं को आदर-सम्मान की दृष्टि से देखते हैं और उनके साथ उत्तम व्यवहार करते हैं। इसी कारण वह देश प्रगति के शिखर पर है। हमारे देश के पतन का मुख्य कारण यह है कि हमने शक्ति की इन सजीव प्रतिमाओं के प्रति आदर-बुद्धि न रखी। स्त्रियों की अनेक समस्याएँ हैं लेकिन अशिक्षा के कारण किसी भी समस्या का समाधान न हो सका। इस बात की पहचान कर स्वामी दयानंद सरस्वती ने 'स्त्री-शिक्षा' पर बहुत बल दिया। स्त्रियों को केवल चूल्हा-चौका और संतानोत्पादन का यंत्र न समझा जाए। इसी बात को ध्यान में रखकर गांधीजी ने नारियों को स्वतंत्रता-संग्राम में योगदान देने के लिए ललकारा।

क. अमेरिका में महिलाओं की कैसी स्थिति है?

ख. भारत के विकास में सबसे बड़ी बाधा क्या है?

ग. स्वामी दयानंद सरस्वती ने किस बात पर बल दिया?

घ. गाँधीजी ने नारियों को स्वतंत्रता-संग्राम के लिए क्यों ललकारा?

प्रश्न-2 दिए गए संकेत बिन्दुओं के आधार पर लगभग 250 शब्दों में निबंध लिखें।

10

अ. मेरे प्रिय कवि

1. भूमिका
2. कवि का जीवन
3. कवि की रचनाएँ एवं महत्त्व
4. कवि की देन
5. उपसंहार

ब. प्रदूषण की समस्या

1. भूमिका
2. प्रदूषण के प्रकार
3. प्रकृति और मानव पर कुप्रभाव
4. प्रदूषण के कारण और रोकथाम के उपाय
5. उपसंहार

स. नशाबंदी

1. भूमिका
2. एक बुराई के रूप में
3. सामाजिक समस्या
4. हानि
5. उपसंहार

प्रश्न-3 आर्थिक सहायता हेतु प्रधानाध्यापक के पास एक पत्र लिखें। 5

अथवा

पुलिस अधीक्षक को चोरी की घटनाओं को रोकने के लिए एक पत्र लिखें।

प्रश्न-4 कारक को परिभाषित कर उसके भेदों का नाम विभक्ति-चिह्नों के साथ लिखें। 5

अथवा

बलाघात से क्या समझते हैं? स्पष्ट करें।

प्रश्न-5 रिक्त स्थानों की पूर्ति करें । 5 x 1=5

1. 'न' का उच्चारण स्थान.....है।
2. त्रिफला.....समास है।
3. आप.....सर्वनाम है।
4. लौटा.....शब्द है।
5. अज्ञ का विपरीतार्थक शब्द.....है।

प्रश्न-6 निम्नलिखित अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध करें। 5 x 1=5

1. यह सौ रूपया का नोट है।
2. उसने एक फूल की माला बनायी।
3. मैने एक नाग को मारा।
4. विष्णु के अनेको नाम हैं।
5. हम तो अवश्य ही जायेंगे।

प्रश्न-7 स्तम्भ अ और ब का सही मिलान आमने-सामने करें। 6x 1=6

	स्तम्भ -अ		**स्तम्भ ब**
1.	वीरेन डंगवाल	क.	एक वृक्ष की हत्या
2.	अनामिका	ख.	विनोद कुमार शुक्ल

3.	कुँवर नारायण	ग.	अशोक वाजपेयी
4.	मछली	घ.	महात्मा गाँधी
5.	आविन्यों	च.	अक्षर ज्ञान
6.	शिक्षा और संस्कृति	छ.	हमारी नींद

निर्देशः प्रश्न संख्या 8 से 20 तक के प्रत्यक प्रश्न के उत्तर 30 शब्दों में दें:-

प्रश्न-8 जातिवाद के पोषक उसके पक्ष में क्या तर्क देते हैं? 3

प्रश्न-9 लेखक की दृष्टि में सच्चे भारत के दर्शन कहाँ हो सकते हैं और क्यों? 3

प्रश्न-10. नागरी लिपि कब तक सार्वदेशिक लिपि थी? 3

प्रश्न-11. बिरजू महाराज अपना सबसे बड़ा जज किसको मानते थे? 3

प्रश्न-12. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दें।

काशु तैश में आ गया। वह इसी उम्र में नौकरों पर अपनी बहनों पर हाथ चला देता था और क्या मजाल की कोई उसे कुछ कर दे। उसने आव देखा न ताव, मदन को एक घूँसा रसीद कर दिया।

क. यह गद्यांश किस पाठ से लिया गया है? 1

ख. इस पाठ के लेखक कौन है? 1

ग. गद्यांश का भाव स्पष्ट करें। 3

प्रश्न-13. वाणी कब विष के समान हो जाती है? 3

प्रश्न-14. कवि को वृक्ष बूढ़ा चौकीदार क्यों लगता था? 3

प्रश्न-15. कवि ने डफाली किसे कहा है और क्यों? 3

प्रश्न-16. 'मेरे बिना तुम प्रभु' कविता का वण्य विषय क्या है? 3

प्रश्न-17. निम्नलिखित पद को पद का पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दें?

'बोलि सकत हिन्दी नहीं, अब मिली हिन्दू लोग।
अंगरेजी माखन करत, अंगरेजी उपभोग।।'

क. प्रस्तुत पंक्तियाँ किस कविता से अवतरित हैं ? 1

ख. इसके रचनाकर कौन है? 1

ग. उक्त पंक्तियों का भाव स्पष्ट करें। 3

प्रश्न-18. मंगू को अस्पताल ले जाने के समय माँ की स्थिति कैसी थी? 3

प्रश्न-19. बड़े अस्पताल का डॉक्टर कैसा आदमी था? 3

प्रश्न-20. मंगम्मा को अपनी बहू के साथ किस बात को लेकर विवाद था? 4

उत्तर मॉडल सेट-10

उत्तर-1 (अ)

(क) 'गीत' काव्य विधा के अंतर्गत आता है।

(ख) गीतों की उत्पत्ति उसी समय से हुई होगी जब लोगों ने अपनी भावनाओं को व्यक्त करना शुरू किया होगा और वे गीत के रूप में प्रकट हुई होंगी।

(ग) विद्यापति भगवान शंकर, दुर्गा, भैरव, गंगा आदि के असंख्य गीत लिखे थे।

(घ) गीत लिखने वाले कवियों की परम्परा में सूर, तुलसी, मीरा, मैथिलीशरण गुप्त, महादेवी वर्मा, जयशंकर प्रसाद आदि कवि हैं।

(च) 'आधुनिक मीरा' की संज्ञा महादेवी वर्मा को दी गई हैं।

(छ) गीत विधा

उत्तर-1 (ब)

(क) अमेरिका में महिलाओं की स्थिति अच्छी है क्योंकि वहाँ उन्हें आदर-सम्मान मिलता है।

(ख) भारत के विकास में सबसे बड़ी बाधा महिलाओं के प्रति आदर-बुद्धि नहीं रखा जाना है। स्त्रियाँ समस्याग्रस्त हैं।

(ग) स्वामी दयानंद सरस्वती ने स्त्री-शिक्षा पर बल दिया था।

(घ) नारियों को केवल चूल्हा-चौका और संतान-उत्पादन का यंत्र न समझा जाए। गाँधीजी ने नारियों को स्वतंत्रता-संग्राम के लिए ललकारा।

उत्तर-2 (अ) मेरे प्रिय कवि

(1) भूमिका - मेरे प्रिय कवि 'गोस्वामी तुलसीदास' हैं। ये एक स्वनामधन्य प्रसिद्ध राम-भक्त कवि थे। ये भक्तिकाल के कवि हैं। तुलसीदास ने राम-भक्ति के माध्यम से मानव-जाति को नई राह दिखलाई तथा धर्म और कर्त्तव्य का पालन करना सिखलाया।

(2) कवि का जीवन- तुलसीदास के पिता का नाम आत्माराम दुबे तथा माता का नाम हुलसी था। इनका विवाह दीनबंधु पाठक की कन्या रत्नावली से हुआ था। इनका बाल्य काल बहुत ही गरीबी एवं निर्धनता में बीता। जन्मते ही माता-पिता चल बसे।

पत्नी की भर्त्सना से आहत होकर ये राम-भक्ति की तरफ मुड़ गये और घूम-घूम कर देशाटन किया। गुरु की सेवा, भक्ति, सत्संगति, स्वाध्याय और मानव-सेवा इनके जीवन का लक्ष्य बन गया।

(3) कवि की रचनाएँ एवं महत्त्व- तुलसीदास की बारह प्रामाणिक रचनाएँ हं, वे हैं- रामचरितमानस, दोहावली, कवितावली, गीतावली, रामाज्ञा प्रश्न, विनय पत्रिका, रामलला नहछू, पार्वती मंडल, जानकी मंडल, बरवै रामायण, वैराग्य संदीपनी और श्रीकृष्ण-गीतावली। इनकी रचनाएँ रामभक्ति के माध्यम से समाज-सुधार करती है। इनके आराध्य राम है। राम का चरित्रादर्श हमें नई रोशनी देता है। राम मानवतावाद के प्रतीक हं।

(4) कवि की देन- प्रत्येक कवि अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज को कुछ-न-कुछ देता है। तुलसीदास की रचनाएं हमें सोते से जगाती हं। यह हमें जीवन में आगे बढने, कर्म करने, धर्म का पालन करने के लिए प्रेरित करती हैं। तुलसीदास ऐसे समय में पैदा हुए थे, जब सारा समाज विश्रृंखलित हो गया था। अतः तुलसीदास की देन आज भी प्रासंगिक है।

(5) उपसंहार- तुलसीदास का जीवन और काव्य दोनों हमें प्रेरित करत हैं। उनकी रचनाएँ गेय हैं यानी गायी जानेवाली हं, जिनसे भक्ति-रस प्रवाहित होती है। ये ऐसी रचनाएँ हैं जिनसे भक्ति एवं ज्ञान, जीवन-संदेश और आनन्द सब-कुछ प्राप्त हो जाता है। वे हिन्दी के श्रेष्ठ कवि कहे जाते हैं।

उत्तर 2. (ब) प्रदूषण की समस्या

(i) भूमिका- यहाँ प्रदूषण कई स्तरों पर फला है- जल-प्रदूषण, वायु-प्रदूषण, ध्वनि-प्रदूषण आदि। हम जिस समाज एवं परिवेश में रह रहे हैं वहाँ कई प्रकार के प्रदूषणों का आक्रमण है। जहाँ भी जाइए वायु-प्रदूषण दिख जाएगा। सड़कों पर गाड़ियाँ दौड़ रही हैं, धूल उड़ रहे हैं आपकी आँखें लाल हो जाएँगी। तेज आवाजें आपके कान को कष्ट पहुँचाएँगी, आप परेशान हो जाएँगे। आपको अपने आस-पास विभिन्न प्रकार के प्रदूषण नजर आएँगे। वर्षा ऋतु में तो 'जल प्रदूषण' से मच्छर, मक्खी आदि पनपने लगते हैं, जो विभिन्न रोगों को आमंत्रण देते हैं।

(ii) प्रदूषण के प्रकार - जैसा कि ऊपर बताया गया कि हमारे आस-पास विभिन्न प्रकार के प्रदूषण हैं, जैसे- जल-प्रदूषण, वायु-प्रदूषण, ध्वनि-प्रदूषण, मृदा प्रदूषण आदि। आज चारों ओर प्रदूषण से आम आदमी तबाह और परेशान है। वे मुक्ति के लिए यत्र-तत्र छटपटाते देखे जाते हैं।

(iii) प्रकृति और मानव पर कुप्रभाव - प्रदूषण के इस प्रकार फलने से मानव और प्रकृति दोनों को ही नुकसान है। प्रकृति यदि दूषित हो जाएगी तो उसका कुप्रभाव पशु-पक्षियों, मनुष्यों एवं वनस्पतियों पर पड़ेगा। आज खाँसी-सर्दी, नेत्र-रोग, पेट तथा विभिन्न प्रकार की बीमारियाँ जल-प्रदूषण से फैलती हैं। वायु-प्रदूषण भी हमारे स्वास्थ को प्रभावित करता है।

(iv) प्रदूषण के कारण और रोकथाम के उपाय- प्रदूषण के बढ़ने का एक बड़ा कारण बढ़ते उद्योग-धंधे हैं, विभिन्न प्रकार की मशीनें भी हमारे वातावरण को प्रभावित करती हैं। मशीनों से निकलने वाली धुएँ हमारे वातावरण को विषाक्त बनाती हैं। फलतः एसी प्रदूषणयुक्त हवाएँ स्वच्छ नहीं रहतीं, वे हमें बीमार बनाती हैं। जल-प्रदूषण से भी अनेक प्रकार के रोग पनपते हैं। हैजा, पेचिश, उल्टी, पेट-संबंधी रोग, पानी से ही तो फलते हैं। आजकल हिपाटाइटिस 'बी' तथा लीवर की बीमारी भी जल-प्रदूषण के कारण ही फल रही हैं।

इनकी रोकथाम के लिए जरूरी है कि हम साफ तथा ताजे जल का उपयोग करें। पानी उबालकर पीयें, खाना ढँककर रखें तथा नदी, तालाब, कुएँ के जल का उपयोग पीने के लिए नहीं करें। यदि पीना ही पड़े तो अच्छी तरह उबालकर पीयें। वायु-प्रदूषण से बचने के लिए अधिक-से-अधिक पेड़ लगाए जाएँ। अधिक पुरानी गाड़ियाँ सड़कों पर नहीं चलायी जाएँ तथा जो भी गाड़ियाँ चलें उन्हें प्रदूषणमुक्त बनाकर चलाया जाए। दुर्गन्ध उगलती नालियों की साफ -सफाई की जाए तथा समय-समय पर दवाइयों का भी छिड़काव किया जाए। मृदा-प्रदूषण से बचने के लिए भी वैज्ञानिक तरीकों से खेती की जाए। ऐसा न हो कि खेती वाली भूमि में इतने अधिक कीटनाशक तत्व डाल दिए जाएँ कि वहाँ से गुजरने वालों को कष्ट होने लगे तथा मिट्टी भी जहरीली बन जाए।

वस्तुतः ऐसा इस कारण कि प्रदूषण का असर हमारी भोजन-सामाग्री पर भी प्रत्यक्ष तौर से पड़ता है।

(v) उपसंहार - आज सर्वत्र प्रदूषण से बचाव के लिए विभिन्न प्रकार के उपाय किए जा रहे हैं । सरकारी एवं गैर सरकारी स्तर पर विभिन्न संगठनों के द्वारा जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है कि वे प्रदूषण से मुक्ति हेतु विभिन्न उपाय करें। विद्यालय-स्तर पर भी कई योजनाएँ चलायी जाती हैं, जैसे- जल-संरक्षण, पर्यावरण-संरक्षण आदि। इनका मूल उद्दश्य स्वस्थ जीवन जीने में मानव का सहयोग करना है। ये कार्य इसलिए भी प्रासंगिक हैं क्योंकि आज विकास के साथ-साथ ध्वंस की भी समस्याएँ आ गई हैं। प्रकृति के साथ छेड़छाड़ होने से प्रकृति प्रदूषित हो गई है। जंगल काटे जा रहे हैं, पहाड़ काटे जा रहे हैं, ये सब हमारे लिए खतरे की घंटी है।

उत्तर 2. (स)नशाबन्दी

(i) भूमिका- जब नशीली आँखें, बदबू भरा मुख, लड़खड़ाते कदम, कीचड़ से सना शरीर आर बहकती वाणी वाले व्यक्ति नजर आते हैं तब अच्छे मानव की आत्मा उसके हृदय को कचोटने लगती है। वह सोचने लगता है कि मद्य का सेवन मानव को मानव नहीं रहने देता। मद्य-सेवन मादकता तो प्रदान करता ही है इसी के साथ वह व्यक्तित्व का विनाश, निर्धनता की वृद्धि और मृत्यु के द्वार भी खोलता है। अतः इस आसुरी प्रवृत्ति को समाप्त करना परमावश्यक है।

(ii) एक बुराई के रूप में- मद्यपान से व्यक्ति कुछ क्षण को अपने को एवं इस संसार को भूल जाता है। मजदूर-वर्ग अधिकतर इसी प्रवृत्ति के कारण मद्यपान करता है। कुछ धार्मिक उत्सवों पर लोग विशेष रूप से मद्यपान करते हैं। जहाँ साधारण लोग निम्न श्रेणी के शराब का सेवन करते हैं वहीं धनवान लोग अँगरेजी शराब का पान शान-शौकत से करते हैं।

(iii) सामाजिक समस्या- आज देशी-विदेशी शराब की कुल खपत गाँवों में तथा नगरों में अंधाधुंध बढ़ रही है। भारत में प्राचीन काल में सोमपान का प्रचलन था जो अब मद्यपान हो गया है। यूरोप तथा अमेरिका में मद्यपान सामाजिक समस्या के रूप में उभरा है। बिहार में सामाजिक समस्या को देखते हुए बिहार सरकार ने ऐतिहासिक निर्णय लेते हुए मद्य-निषेध कर दिया है।

(iv) हानि- मद्यपान शरीर का क्षय करता है। इसके पीने से पेट में आग-सी लग जाती है, आँखें जलने लगती हैं और धीरे-धीरे भूख समाप्त हो जाती है। इससे यकृत पर बुरा प्रभाव पड़ता है। जिससे लीवर सिरोसिस नामक बीमारी भी हो सकती है जो प्राण लेकर ही पीछा छोड़ती है। इससे चर्बी घटती है तथा त्वचा सख्त काली पड़ने लगती है और चेहरे पर झुर्रियाँ पड़ने लगती हैं।

(v) उपसंहार- सौभाग्य से बिहार सरकार ने 5 अप्रैल 2016 से मद्य-निषेध कानून को पूर्णतः लागू कर दिया है। बिहार के मुख्यमंत्री माननीय नीतीश कुमार नशाबंदी के लिये पूर्णतः दृढ़ता से कटिबद्ध हैं। सरकार के इस नशाबन्दी अभियान में आज समाज भी पूर्णतः सहयोग दे रहा है। समाज की महिलाएँ भी इस पुनीत कार्य में सहयोग दे रही हैं।

उत्तर-3

सेवामें,

प्रधानाध्यापक
बी.पी. इंटर विद्यालय, बेगूसराय

द्वारा- वर्ग शिक्षक।

विषय-आर्थिक सहायता हेतु।

महोदय,

निवेदन है कि मैं अत्यंत गरीब छात्र हूँ। मेरे पिताजी की आय बहुत कम है। इसके कारण मेरी पढ़ाई में परेशानी आ रही है। मुझे आर्थिक सहायता की आवश्यकता है।

अतः श्रीमान् से अनुरोध है कि मुझे आर्थिक सहायता प्रदान करने की कृपा करेंगे।

दिनांक- 09.12.2016 आपका आज्ञाकारी छात्र

गुंजन कुमार

क्रमांक- 03

वर्ग- दशम्

अनुभाग-3

उत्तर-3 अथवा,

सेवामें,

आरक्षी अधीक्षक

मधुबनी

विषय- चोरी की बढ़ती घटनाओं के सम्बन्ध में।

महाशय,

उपर्युक्त विषय के सम्बन्ध में कहना है कि इन दिनों चोरी की घटनाएँ काफी बढ़ गइ हैं। रात-रात भर जगे रहने के बावजूद चोरी की घटनाएँ हो जाती हैं। बड़े पैमाने पर अन्न, धन एवं वस्त्र चोर उठाकर ले जा रहे हैं। स्थानीय थाना कोई कारगर कदम नहीं उठा रहा है।

अतः श्रीमान् से आग्रह है कि रात्रि में पुलिस गश्ती बढ़ाने हेतु थाने को आदेश देने की कृपा की जाए ताकि गाँव वालों को चोरी की घटनाओं से निजात मिल सके।

दिनांक-09.12.2016

विश्वासी

प्रशान्त कुमार

ग्राम+पो०- हरिपुर

मधुबनी

उत्तर-4 संज्ञा अथवा सर्वनाम का वह रूप जो वाक्य के अन्य शब्दों, विशेषतः क्रिया से अपना सम्बन्ध प्रकट करता है, कारक कहा जाता है। जैसे-कृष्ण ने पाण्डवों से कौरवों का नाश करवा दिया।

कारक के भेदः- हिन्दी में आठ कारक हैं, इनके नाम, विभक्तियाँ और लक्षण निम्नांकित हैं-

क्रम	कारक	विभक्तियाँ
1.	कर्ता	ने, शून्य
2.	कर्म	को, शून्य
3.	करण	से (द्वारा)
4.	सम्प्रदान	को, के लिए
5.	अपादान	से (वियोग)
6.	सम्बन्ध	का, के, की
7.	अधिकरण	में, पर
8.	सम्बोधन	हे, अरे, रे

उत्तर-4.अथवा,

शब्द बोलते समय अर्थ उच्चारण की स्पष्टता के लिए जब हम किसी अक्षर पर अधिक बल देते हैं तब इस क्रिया को 'स्वराघात' या 'बलाघात' कहते हैं। जैसे-इन्द्र, विष्णु। इनमें संयुक्त अक्षर से पहले इ और वि पर जोर दिया गया है।

उत्तर-5. (i) नासिका

(ii) द्विगु

(iii) निजवाचक

(iv) देशज

(v) विज्ञ

उत्तर-6. (i) यह सौ रुपये का नोट है।

(ii) उसने फूलों की एक माला बनायी।

(iii) मैंने एक नाग मारा।

(iv) विष्णु के अनेक नाम हैं।

(v) हम तो अवश्य जाएँगे।

उत्तर-7. (i) (छ)

(ii) (च)

(iii) (क)

(iv) (ख)

(v) (ग)

(vi) (घ)

उत्तर-8. जातिवाद के पक्ष में इसके पोषकों का तर्क है कि आधुनिक सभ्य समाज कार्य-कुशलता क लिए श्रम-विभाजन को आवश्यक मानता है और

जाति-प्रथा भी श्रम-विभाजन का ही दूसरा रूप है इसलिए इसमें कोई बुराई नहीं है।

उत्तर-9. लेखक की दृष्टि में सच्चे भारत का दर्शन भारतीय ग्रामीण जीवन में हो सकता है। भारतीय ग्राम्य संस्कृति में सच्चा भारत निहित है क्यांकि सच्चाई, प्रेम, करुणा, सहयोग की भावना ग्रामीणों में कूट-कूट कर भरी होती है। इनके समीप होने से आनन्द एवं उत्साह का भाव जागृत होता है। इनमें भारत की वास्तविक छवि की झलक मिलती है।

उत्तर-10. ईसा की आठवीं-ग्यारहवीं सदियों में नागरी लिपि पूरे देश में व्याप्त थी। अत: उस समय यह एक सार्वदेशिक लिपि थी।

उत्तर-11. बिरजू महाराज अपना सबसे बड़ा जज अपनी अम्मा को मानते थे। जब वे नाचते थे और अम्मा देखती थीं तब वे अम्मा से अपनी कमी या अच्छाई के बारे में पूछा करते थे। उन्होंने बाबूजी से तुलना करके अपने नृत्य में निखार लाने का काम किया।

उत्तर-12. (क) विष के दाँत

(ख) नलिन विलोचन शर्मा

(ग) काशू मन का बहुत बढ़ा हुआ लड़का था जिसे अपनी बड़ी बहनों एवं घर के नौकरों पर हाथ छोड़ देने में कोई गुरेज नहीं थी। इसी मनोभाव से उसने घर के बाहर भी मदन पर हाथ छोड़ दिया जो मदन के लिए असहनीय था।

उत्तर-13. जिस वाणी से 'राम' नाम का उच्चारण नहीं होता है अर्थात् भगवत् नाम के बिना वाणी विष के समान हो जाती है।

उत्तर-14. कवि ने एक वृक्ष के बहाने प्राचीन सभ्यता, संस्कृति एवं पर्यावरण की रक्षा की चर्चा की है। वृक्ष मनुष्यता, पर्यावरण एवं सभ्यता का प्रहरी है। यह प्राचीन काल से मानव के लिए वरदान स्वरूप है, मानवता का

पोषक एवं रक्षक है। इन्हीं बातों का चिंतन करते हुए कवि को वृक्ष बूढ़ा चौकीदार लगता है।

उत्तर–15. कवि ने 'डफाली' शब्द उन भारतीयों के लिए कहा है जो अँगरेजी की खुशामद किया करते थे, उनकी ही प्रशंसा में लगे रहते थे।

उत्तर–16. 'मेरे बिना तुम प्रभु' कविता का वर्ण्य विषय है– विराट सत्य और मनुष्य एक–दूसरे पर निर्भर हैं।

उत्तर–17. (क) स्वदेशी

(ख) बदरी नारायण चौधरी 'प्रेमधन'

(ग) कवि चिंतित है कि भारतीय संस्कृति पर अब अँगरेजी संस्कृति हावी होने लगी है क्योंकि लोग हिन्दी बोली, हिन्दुस्तानी पहनावा आदि को छोड़कर अँगरेजों जैसा व्यवहार करने लगे हैं। अँगरेजी बोलते हैं और अँगरेजों के सामान का उपभोग करते हैं।

उत्तर–18. अस्पताल ले जाने के पूर्व की रात माँ को नींद नहीं आई। उसे लेकर घर से निकलने लगी तो लगा कि ब्रह्माण्ड का भार उसके ऊपर आ गया। आँखों से सावन–भादो शुरू हो गये।

उत्तर–19. बड़े अस्पताल का डॉक्टर पेशे से कुशल और भला आदमी था। वह पप्पाति को भर्ती कर उसका इलाज करना चाहता था, किन्तु; भ्रष्टाचारियों के आगे उसकी एक न चली।

उत्तर–20. मंगम्मा दही बेचने का कार्य करती थी। उसे एक पोता भी था जिसे वह अपने प्राण से भी ज्यादा प्यार करती थी। उसकी बहू नजम्मा एक दिन बेटे को किसी गलती पर पीट रही थी। इसी पर मंगम्मा ने कहा– क्यों रे! इस छोटे से बच्चे को क्यों पीट रहो है? इस पर नजम्मा, मंगम्मा को खूब सुनाई। बस, उसी दोपहर बहू नजम्मा ने मंगम्मा के बरतन–भांडे अलग कर दिये।